अपने लक्ष्यों को जांचे परखे

जो इंसान किसी चीज पर निशाना ही नहीं लगाता, वह चूकेगा क्या! छोटे लक्ष्य बनाना ही सबसे बड़ी गलती है। जीतने वाले लक्ष्य को देखते हैं, और हारने वले रूकावटों को

हमारे लक्ष्य इतने बड़े होने चाहिए कि हमें प्रेरणा दे सकें, मगर असलियत से इतनी दूर भी न हो कि हम निराश हो जायें।

हम जो कुछ भी करते हैं, या तो हमें लक्ष्य के करीब ले जाता है या उससे दूर। हर लक्ष्य इन पैमानों पर तौला जाना चाहिए लक्ष्य को कसोटी पर खरे तब नहीं उतरते-

1. अगर मेरा लक्ष्य सेहतमंद बनना हो, लेकिन जेब से मैं पैसा न हो, तो यह बिल्कुल साफ है कि यह व्यवहारिक नहीं है। इसका मतलब यह है कि इसका तालमेल हमारे दूसरे लक्ष्यों के साथ नहीं है।

2. एक इंसान दुनिया में जितना चाहे धन कमा सकता है, लेकिन अगर वह अपने सेहत और परिवार को खो देता है, तो क्या उस धन की कोई कीमत है।

3. कोई व्यक्ति नशीली दवाएं बेचकर करोड़ों रुपए कमा सकता है, लेकिन फिर उसे बाकी जिंदगी कानून से भागते हुए बितानी पड़ेगी। इस तरह का व्यवहार गैरकानूनी है, सामाजिक जिम्मेदारी से परे, और मन की शांति तथा ख्याति को छिनने वाला होगा।

बिना कर्म के लक्ष्य खोखले सपनों की तरह होते हैं। कर्म ही सपनों को लक्ष्यों में बदलता है। अगर हम अपना लक्ष्य नहीं भी हांसिल कर पाते, तो इसका मतलब असफल होना नहीं होता। देशी होने का मतलब हारना नहीं है, इसका मतलब यह है कि अपने लक्ष्य को पाने के लिए फिर से योजना बनाने की जरूरत है।

जैसे एक कैमरें को तस्वीर लेने के लिए फोकस करना पड़ता है, वैसे ही हमें भी सफल जीवन पाने के लिए लक्ष्य बनाने की जरूरत पड़ती है।

अपने ऊपर इस डर को कभी हावी न होने दे कि किसी काम को करने में कितना समय लगेगा। वह समय किसी न किसी तरह बीत ही जायेगा, लेकिन हमें उस बीतने वाले समय का बेहतर से बेहतर उपयोग करने की कोशिश करनी चाहिए - अर्ल नाइटिंगल

हमारे लक्ष्यों और नैतिक मूल्यों के बीच तालमेल हो - लक्ष्य हमारे जीवन को अर्थ देते हैं। यह सफलता की ओर पहला कदम है। चाँद बनने का लक्ष्य बनाएं। आप चूक भी गए तो एक तारा तो बन ही जायेंगे।

हेनरी फोर्ड कहते हैं - बाधाएं ऐसी डरावनी चीजें हैं, जो लक्ष्य से आँखें हटने पर आपको दिखती है।

इस दुनिया में हम सभी के जीवन में एक उद्देश्य है, और यह हर इंसान का अलग-अलग हो सकता है। किसी आर्केस्ट्रा में अगर हर कोई एक की बाजा बजा रहा है तो वह सूनने में शायद अच्छा नहीं लगेगा।

जैसे एक कैमरें को तस्वीर लेने के लिए फोकस करना पड़ता है, वैसे ही हमें भी सफल जीवन पाने के लिए लक्ष्य बनाने की जरूरत पड़ती है।

छोटी योजनाएं न बनाएं उनमें इंसान के दिलों में जोश भरने वाला जादू नहीं होता.....। बड़ी योजनाएं बनाएं, परी अज्ञा के साथ ऊंचाई की ओर बढ़ें और काम करें।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कहां है? महत्व इसका है कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। बिना किसी उद्देश्य के मेहनत और साहस भी बेकार होते हैं। चिंता गलत लक्ष्य बनाने की और ले जाती है। चिंतित आदमी उन बातों के बारे में सोचता रहता है जिन्हें वह घटित होते नहीं देखना चाहता। सक्रियता का मतलब उपलब्धि नहीं है।

अल्फ्रेड एमोंटपर्ट कहते हैं - सक्रियता को उपलब्धि मानने की भूल न करें। कठघोड़ा अपनी जगह पर लगातार चलता दिखता है, लेकिन अगे जरा भी नहीं बढ़ता।

सक्रियता और उपलब्धि में बहुत फर्क है। एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक कब्र ने इस बात को भेड़चाल वाले कैटरपिलस्टे के साथ एक प्रयोग करके दिखाया। कैटरपिलर्स्ट अपने सामने वाले की नकल करते हुए आँखें मूंदकर चलते हैं। कैब्रे ने उन्हें एक फूलदान के घेरे में इस तरह से रखा कि सबसे आगे वाला कैटरपिलर वास्तव में सबसे पीछे, कैटरपिलर के ठीक पीछे रहा। फिर उसने चीड़ के कांटे, जो कैटरपिलर का भोजन है, उस फूलदान के बीच में रख दिए। कैटरपिलर्स उस फूलदान में एक घेरे में ही घूमते रहें। आखिरकार एक घुमते तक चक्कर लगाने के बाद वे थकान और भूख से भर गए, जबकि खाना उनसे कुछ ही इंच दूर था। हमें कैटरपिलर्स से सीख लेनी चाहिए। सिर्फ काम करते रहने का मतलब यह नहीं है कि आप कामयाबी की तरफ बढ़ रहे हैं। हर किसी को अपने काम को परखते रहना चाहिए ताकि, हमारे का फल मिल सके।

एक आदमी अपनी पत्नी के साथ गाड़ी चला रहा था। पत्नी ने कहा, प्रिय, हम लोग गलत दिशा में जा रहे हैं। पति ने जवाब दिया, कौन परवाह करता है, हम बिफोर टाइम चल रहे हैं।

अगर हम सिर्फ रफ्तार और काम करने को कामयाबी समझ बैठे तो हमारी गाड़ी तो बहुत अच्छी चलेगी, मगर हम कहीं पहुंचेंगे नहीं।

निरर्थक लक्ष्य - किसी किसान का एक कुत्ता सड़क के किनारे बैठकर आने वाली गाड़ियों का इंतजार करता रहता था। जैसे ही कोई गाड़ी आती, वह भौंकता हुआ उसके पीछे दौड़ता। एक दिन उसेन पड़ोसी ने उस किसान से पूछा, क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम्हारा कुत्ता कभी किसी गाड़ी को पकड़ पाएगा? उस किसान ने जवाब दिया, सवाल यह नहीं है कि वह किसी गाड़ी को पकड़ पाएगा, बल्कि यह है कि अगर पकड़ पाएगा तो वह क्या करेगा?

बहुत से लोग उस कुत्ते की तरह निरर्थक लक्ष्यों के पीछे भागते रहते हैं।

कोचीन। पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे.अब्दूल कलाम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुवर्णा बहन।

मडगांव, गोवा। आध्यात्मिक गुरु श्री.श्री.रविशंकर से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुरेखा बहन।

मीरा रोड, मुम्बई। भाईंदर महानगरपालिका की महापौर बहन कैटलिन परेरा को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.रंजन बहन।

मुलुण्ड (वेस्ट)। विधायक तारसिंह को ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु.वर्षा बहन, ब्र.कु.माला बहन तथा अन्य।

नगर, भरतपुर। ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में हैं थानाधिकारी हीरा लाल सैनी, ब्र.कु.हीरा बहन, ब्र.कु.मिथलेश बहन तथा अन्य स्टाफ।

नागपुर। शांतिवन के ब्र.कु.भगवान को उनकी आध्यात्मिक सेवाओं में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'सनराईज अवार्ड' से सम्मानित करते हुए सनराईज पीस मिशन के संस्थापक हरगोविंद मुरारका।

आध्यात्मिक एवं ... पृष्ठ 1 का शेष 25,000 स्क्वायर फीट में हुआ है। स्टूडियो बनाने का उद्देश्य यही है कि यहाँ से हर भाषा में कार्यक्रम का प्रसारण किया जा सके।

इस उद्घाटन समारोह में संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी, प्योरिटी के संपादक ब्र.कु.बृजमोहन, सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक ब्र.कु.करूणा, यूरोप स्थित सेवाकेंद्रों की संचालिका ब्र.कु.जयंति आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संस्थान के इस स्वर्णिम और ऐतिहासिक अवसर पर देश-विदेश से हजारों की संख्या में भाई-बहनें उपस्थित थे।

इससे पूर्व गॉडलीवुड स्टूडियो में स्टूडियो 'सी' के उद्घाटन अवसर पर टॉक शो का भी आयोजन किया गया, जिसमें दादी जानकी, ब्र.कु.रमेश शाह, ब्र.कु.मोहिनी एवं ब्र.कु.जयंति ने विशेष रूप से भाग लिया। डायमण्ड हॉल में देश-विदेश से आए कलाकारों ने मूल्यनिष्ठ एवं शिक्षाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए, तो पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

इस प्रकार अनेकानेक ब्रह्मावत्सों के दिल में अमिट छाप छोड़ते हुए यह कार्यक्रम संस्था के स्वर्णिम इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ने में कामयाब रहा।

वर्तमान समय.... पृष्ठ 1 का शेष

नकारात्मकता और अन्याय के लिए कोई स्थान न हो। इस कार्य में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आध्यात्मिकता विश्वास और सफलता की कुंजी है। उन्होंने भारत और नेपाल के सम्बन्धों में और अधिक सौहार्द्र लाने के लिए द्विपक्षीय प्रयास करने पर बल दिया।

संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि देश-विदेश से आये भाई-बहनें विश्व शांति की स्थापना में सहयोगी बनेंगे। दादीजी ने कहा कि आने वाले समय में भारत देश पूरे विश्व का प्रतिनिधित्व करेगा। हिम्मत, विश्वास और सच्चाई से लोग साथी बनते हैं।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से आये नेविल हांजकिन्सन ने कहा कि भारत देश की आध्यात्मिक संस्कृति की प्रशंसा की और कहा कि यहां के मूल्य और संस्कृति से पूरा समाज सकारात्मक बदलाव की ओर बढ़ रहा है। ब्र.कु.रमेश शाह ने कहा कि आध्यात्मिक शक्ति और राजनैतिक शक्ति को मिलाकर कार्य करना चाहिए जिससे आध्यात्मिक क्रांति पूरे विश्व में फैल सके और नये सृष्टि की स्थापना का कार्य संपन्न हो सके। इस कार्यक्रम को ब्र.कु.बृजमोहन, ब्र.कु.मृत्युंजय, लाईव इंडिया न्यूज चैनल की सीईओ सुप्रिया कांते ने भी सम्बोधित किया। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु.आशा ने किया।

सभी देशों का हुआ प्रतिनिधित्व - पूरे विश्व के 137 देशों से आये प्रतिनिधियों ने ध्वजारोहण समारोह में भाग लेकर अपने-अपने देशों का प्रतिनिधित्व किया तथा इस अवसर पर रंग-विरंगे गुब्बारे भी आकाश में उड़ाये गये।